11

नाबाल

बलियाल का पुत्र

(25:2-39)

बुराई में इतनी शक्ति है कि यह अच्छाई से अधिक प्रभाव और जल्दी फैलती है। गंदगी की एक बूंद ही शुद्ध जल से भरे कटोरे को गंदा कर सकती है; परन्तु शुद्ध जल की एक बूंद उसी तरह से गंदे जल से भरे कटोरे को शुद्ध नहीं कर सकती। दांत या अंगुली में तेज़ दर्द पूरे शरीर के लिए असहनीय हो जाता है, चाहे उसका बाकी शरीर स्वस्थ ही हो; परन्तु यदि सारा शरीर दुख रहा हो, तो अंगुली या दांत के स्वस्थ्य होने से कुछ फर्क नहीं पड़ेगा।

थोड़ी सी बुराई शांति, एकता तथा प्रसन्नता को नष्ट कर सकती है। 25:2-39 में नाबाल ने इसे चरितार्थ किया है। बाइबल में उसे ''बलियाल का पुत्र'' के रूप में याद किया जाता है। उसके लिए यह शीर्षक मूलत: यह सुझाव देता है कि वह बेकार तथा शैतान का साथी था।

नाबाल बहुत धनी था जिसका उसकी भेड़ों तथा बकरियों के बड़े-बड़े झुंडों से साफ़ पता चलता था (25:2)। फिर भी उसका ''बड़ा'' होना ऐसा था जिसमें संसार के लोग गर्व करते हैं। वह कालेब के वंश से था। इसका अनुवाद ''लालची स्वज़ाव वाला'' हो सकता है और उसका सज़्बन्ध यहोशू के समय के उस मार्गदर्शक से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

भेड़ों से ऊन कतरने का समय आ चुका था। यह समय पर्व मनाने, आनन्द करने तथा बड़ी-बड़ी दावतें देने का होता था (तु. 2 शमूएल 13:23, 24)। ''लाभ'' का अनुमान लगाकर मजदूरों का वेतन आदि दिया जाना था। कंजूस नाबाल को आनन्द तथा दावत देने की कोई बात नहीं थी। दाऊद ने नाबाल को बहुत बड़ी सेवा दी थी (25:14-16), परन्तु नाबाल दाऊद द्वारा दी गई सेवाओं के बदले कुछ देने से कतरा रहा था। नाबाल के इसी नीच व्यवहार के कारण उसकी मृत्यु जल्दी हो गई।

नाबाल ने अपने आस पास के लोगों की खुशी छीन ली थी। परमेश्वर का भय रखने वाली अबीगैल इतने समय तक उसका कठोर तथा क्रूर व्यवहार सहती रही थी कि उसके मन में उसके प्रति आदर तथा प्रेम खत्म हो गया था (25:25)। उसके नौकर नाबाल को असज़्य तथा परमेश्वर की सेना के शत्रु के रूप में देखते थे।

नाबाल की बोआई

नाबाल स्वार्थी आदमी था (25:11)। उसे लगता था कि उसे किसी की आवश्यकता नहीं है। उसका मानना था कि उसे किसी आदमी तथा यहां तक कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ भी मेल की आवश्यकता नहीं है (25:6, 10)। इस व्यवहार के कारण वह रूखा तथा क्रूर बन गया था (25:3)। वह उन सब की अच्छी मिसाल है जिनके जीवन संसार में परमेश्वर के बिना हैं। अपने अज़्कड़पन के कारण नाबाल ज़िद्दी था और उन लोगों पर जो उसकी सहायता के लिए सुझाव देना चाहते थे, क्रोधित हुआ (25:17क)। वह अन्यायपूर्ण तथा सूम था (25:21)। वह दूसरों को नीचा दिखाने वाला भी था (25:10-12)। वह भद्दी तथा अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करता था (25:14)। नाबाल की बोल-चाल अच्छी नहीं थी। उसकी बातें कठोर, क्रूरता से भरी और अपमानजनक थीं। 25:14 में ''ललकार दिया'' शज़्द का मूल अर्थ है कि नाबाल ''उनके ऊपर से शिकार होने वाले पक्षी की तरह उड़ गया।'' बेकाबू जीभ से आदमी की मूर्खता का पता चल जाता है (नीतिवचन 10:14; 18:6, 7)। नाबाल ने मूर्खतापूर्ण बात करके दाऊद का बहुत अपमान किया था और ऐसा करके उसे अच्छा लगा था (25:10, 11)। नाबाल ने अपने शज़्दों के परिणामों पर विचार किए बिना बोल दिया था।

नाबाल ने बुराई करने के लिए दूसरों पर प्रभाव डाला। उसकी उपस्थिति, शज़्द तथा बोलने के ढंग ने दाऊद को वह करने के लिए उकसाया जो उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था (25:13, 22)। दाऊद आम तौर पर कुछ भी कार्य करने से पहले परमेश्वर से सलाह लेता था परन्तु इस बार नाबाल ने उसे इतना चिढ़ा दिया कि दाऊद आपे से बाहर हो गया। उसके लिए यह सही नहीं था, और दाऊद ने अपनी गलती मानी (25:32, 33)।

नाबाल कृतघ्न (नाशुक्रगुज़ार) भी था। उसने दाऊद द्वारा उसके लिए किए गए काम को मान्यता तक नहीं दी (25:16, 21)। नाशुक्रगुज़ारी की यह भावना शैतान की संतान के स्वभाव को ही दिखाती है!

नाबाल शराबी था। उसने इतनी पी ली थी कि उसे होश ही नहीं रहा था। उसने रंगरलियों में आनन्द किया और अपने आप को अपनी इच्छाओं के आगे सौंप दिया। ऐसा गुण पूरी बाइबल में उन्हीं लोगों में पाया जाता है जो शैतान के पीछे चलते हैं (नीतिवचन 31:4-6; 20:1; आदि)।

नाबाल की कटनी

शैतानी कार्यों से जीवन बिताने वाला घिनौने परिणामों की ही कटनी काट सकता है। उसके दुष्ट मार्गों के प्रत्यक्ष परिणामों के रूप में नाबाल के जीवन में तीन भयंकर परिणाम हुए।

नाबाल की कोई इज़्ज़त नहीं करता था! उसके पास सज़्पज़ि थी, और ऐसे प्रभाव तथा शक्ति वाले आदमी का सज़्मान होना चाहिए था, परन्तु उसका कोई आदर नहीं करता था! एक जवान को तो नाबाल के कामों पर ही शर्म आई थी (25:17)। इस सेवक के अंतिम

शब्दों से सेवकों के मन में नाबाल का आदर न होने की बात पता चलती है। उनके लिए नाबाल ''बलियाल का पुत्र'' था (तु. 2 कुरिन्थियों 6:15)। परमेश्वर का भय रखने वाली अबीगैल के मन में अपने पति के लिए कोई सम्मान नहीं था (25:25)। उसका विचार तो सेवकों से भी घटिया था। ऐसा प्रभाव परमेश्वर द्वारा अपने मानने वालों को दी गई आज्ञाओं के विपरीत था (मत्ती 5:16; 1 पतरस 2:11, 12)।

नाबाल इतिहास में एक ''बड़ा मूर्ख'' के रूप में अपनी जगह बना लेता है। उसका जीवन उसके नाम के अनुरूप था (25:25) क्योंकि मूर्खता उसके कामों के साथ-साथ थी। वह मूर्ख, दुष्ट और परमेश्वर का भय न रखने वाला आदमी था। वह बिशप ऑफ़ वरदु की तरह ही मूर्ख था जिसने फ्रांस के राजा लूईस नौंवे को एक लोहे का पिंजरा बनाने का सुझाव दिया जिसमें कैदियों को बंद किया जा सके। यह पिंजरा इस प्रकार बनाया जाना था जिसमें आदमी न तो सीधा खड़ा हो सके और न लेट सके, बल्कि झुककर ही रहे। बाद में एक समय आया जब बिशप ने राजा को नाराज कर दिया और उस पिंजरे में बंद होने वाला पहला व्यक्ति वही बना! वहां वह चौदह वर्ष तक रहा।

नाबाल का अंत बड़ा बुरा हुआ (25:37-39)। नाबाल की मौत के बारे में दो अलग-अलग विचार पाए जाते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि वह वहां होने वाली बातों से इतना डर गया था कि उसे हृदयाघात हुआ और दस दिनों के अन्दर-अन्दर उसकी मृत्यु हो गई। दूसरे का कहना है कि नाबाल दाऊद से और जो कुछ अबीगैल ने किया था उससे परेशान था और क्रोध के कारण उसे हृदयाघात हुआ और दस दिनों के अन्दर वह मर गया।

आशाहीन मृत्यु ''शैतान के पुत्र'' का राह देखती है। निश्चय ही परमेश्वर के पीछे चलने तथा उसकी आज्ञा मानने का यही उद्देश्य है (नीतिवचन 5:22; 11:7क; 14:32; ज़.सं. 116:15; सभोपदेशक 7:1)। जनाजे के समय आम तौर पर कहा जाता है, ''जैसे वह जिया, वैसे ही मरा।'' नाबाल के लिए यह कितना सही था! आज के लोगों के लिए भी यह सत्य है। यदि हम अपने जीवनों का अंत बुरी तरह से नहीं करना चाहते तो हमारा जीवन परमेश्वर के निर्देश के अनुसार ही होना चाहिए।

आज के लिए नाबाल के सबक

किसी ''नाबाल'' के साथ ज़्याहे होने के बावजूद परमेश्वर के वफ़ादार रहना सम्भव है। नाबाल के घर का माहौल सुखद नहीं होगा। अबीगैल के भक्तिपूर्ण कार्य तथा नाबाल के शैतानी कार्यों में टकराव होकर उनका विवाह टूट सकता था। वह स्वादहीन, भौतिक लाभ को समर्पित, परमेश्वर की हंसी उड़ाने वाला और उबाने वाली आदतों वाला आदमी था। उसकी जीभ दुष्ट तथा प्रभाव खतरनाक था। अबीगैल के तंग पड़ने वाली उसमें सब बातें थीं! परन्तु अबीगैल उसे छोड़ा नहीं। आपको आधुनिक ''अबीगैलों'' की सराहना करनी पड़ेगी जो आधुनिक ''नाबालों'' के साथ जीवन बिताती हैं।

बदला लेना कभी सही नहीं होता! किसी ने ठीक ही कहा है, ''बदला लेना किसी पापी के मुंह में शैतान द्वारा डाला जाने वाला सबसे विलासमय निवाला है।'' हम अपने

विरुद्ध की गई गलतियों के लिए अपने आप से बदला नहीं ले सकते (25:38, 39; रोमियों 12:19)।

हम में से हर एक का जीवन आज आने वाले लोगों के लिए पढ़ने के लिए एक इतिहास बन जाता है। सावधान रहें ताकि इतिहास में आपको ''नाबाल'' की तरह याद न किया जाए।

स्वार्थी जीवन की प्रतीक्षा करने वाले दुखद अंत को याद रखें! उसका अंत केवल विनाश है (लूका 12:20, 21; याकूब 4:13-16)।

सारांश

हमने कितने बुरे अध्याय का अध्ययन किया है! एक दुष्ट व्यक्ति का प्रभाव पूरे विवरण पर छाकर ''परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष'' को बदला लेने के लिए उकसा सकता है, जो परमेश्वर के स्वभाव के विपरीत भावना है। बुराई की एक बूंद बहुत सी अच्छाई का नाश कर सकती है!

परमेश्वर करे कि इस पाठ से ''मूर्ख'' की तरह जीवन बिताने की त्रासदी के सबक को ध्यान में रखकर हम ऐसा जीवन बिताने से दूर रहें। नाबाल, शैतान के पुत्र को याद रखें। उसकी मूर्खता की बराबरी न करें!